

शीर्षक

छत्तीसगढ़ प्रदेश में संगीत को नयी दिशा प्रदान करने वाले संगीत साधक डॉ. अरुण कुमार सेन

यास्मीन सिंह

कथक नृत्यांगना-रायगढ़ घराना

पीएच.डी. स्कॉलर

सार

सृष्टिकर्ता ने ऐसे अनेक मानव को जन्म दिया, जिन्होंने अपना सर्वस्व जीवन मानव-कल्याण व सामाजिक कल्याण हेतु न्यौछावर कर दिया। मानव ने प्राचीनकाल से ही अपने जीवन को सार्थक करने तथा ब्रम्हांड में उपलब्धसमस्त ज्ञान को अपनी तपस्या एवं साधना के द्वारा प्राप्त कर उसे मानव जीवन के कल्याण हेतु प्रसारित किया। जिसका उद्देश्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" रहा है। शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में जो कार्य डॉ. अरुण कुमार सेन ने किया, वह अविस्मरणीय व गौरव का विषय रहेगा, जिसके कारण समाज में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में नई चेतना जागृत हुई है।

छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र स्व. डॉ. अरुण कुमार सेन बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। शास्त्रीय संगीत व रागों का आपको विशुद्ध ज्ञान था। आपने छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में सन् 1950 में कमलादेवी संगीत महाविद्यालय की स्थापना की। नारी शिक्षा को महत्व देते हुए रायपुर में कन्या शाला और महिला महाविद्यालय भी आपकी ही देन है। मराठी के "गीत रामायण" को हिन्दी में स्वरबद्ध करके उसे गाकर आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। छत्तीसगढ़ी गीतों की भी आपने अनेक रचनाएं लिखी हैं। अरुण सेन जी का आदर्श है - "सौ वर्षों की निष्क्रियता से एक क्षण की क्रियाशीलता बेहतर है।"

जीवन परिचय



डॉ. अरुण कुमार सेन का जन्म 6 मई, सन् 1928 को छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित आध्यात्मिक स्थल व पावन संगम की माटी, राजिम में हुआ। डॉ. सेन ने बचपन से ही ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व, बहुमुखी प्रतिभा के साथ-साथ दूर दृष्टी, मृदुलभाषिता व कर्मठता थी। डॉक्टर सेन की संगीत की शिक्षा 5 वर्ष की आयु से शुरू हुई थी उस वक्त उनके प्रथम गुरु श्री नारायण मित्रा थे, जिन्होंने उन्हें संगीत की रागदारी शिक्षा विधिवत दी। डॉ. सेन को संगीत के लक्ष्य एवं लक्षण का सम्पूर्ण ज्ञान था। संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से सन् 1941 में आपने श्रीराम संगीत महाविद्यालय में प्रवेश लिया। इसी समय गुरु शिष्य परंपरा के आधार पर आपने अपने गुरु ग्वालियर घराने के पंडित विष्णु कृष्ण जोशी द्वारा संगीत की नियमित

शिक्षा आरम्भ की। सन् 1944 में आपने मध्यमा पूर्ण की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात् 1946 में "संगीत रत्न" की परीक्षा उत्तीर्ण कर श्री राम संगीत महाविद्यालय में नियमित संगीत शिक्षक के पद पर नियुक्त हुए। आप "साहित्य रत्न एवं धर्म विशारद" की उपाधि से विभूषित थे।

सन् 1950 में आपके द्वारा कला मंदिर के नाम से कमला देवी संगीत महाविद्यालय की स्थापना की गई। संस्थाओं के संचालन हेतु आपने भातखण्डे ललितकला शिक्षा समिति का गठन किया। आपने कमलादेवी संगीत महाविद्यालय में शिक्षकीय पद त्यागकर संस्थापक प्राचार्य के रूप में कार्य किया। आपने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के द्वितीय उपकुलपति के रूप में कार्य किया। आपने मुंबई में भातखण्डे संगीत संस्थान की भी स्थापना की।

एक कलाकार

आपकी गायकी में संगीत कलाकार के सम्पूर्ण गुण विद्यमान थे। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन के "ए ग्रेड" कलाकार थे। शास्त्रीय गायन के अलावा सुगम संगीत में आपको विशेष रुचि थी। आपने खड़ी हिंदी बोली में रामचरित मानस को काव्यबद्ध किया, जिसे आप "गीत-रामायण" के नाम से गाते थे। गीत रामायण की प्रस्तुति देश और विदेशों पर करके आपने विशेष ख्याति अर्जित की। राग और बंदीश की गहराई में उतरकर उसे प्रस्तुत करने की सलाह विद्यार्थी को देते थे जिससे गायन भावपूर्ण बन सके। आपके पसंद के रागों में दरबारी कान्हड़ा, मारुबिहाग, अहीर वैभव, बिलासखानी तोड़ी, यमन कल्याण, बैरागी भैरव, और ललित आदि थे। आपकी गायकी में भावपक्ष भी प्रबल था। ताल शास्त्र विषयक ग्रंथ "इंडियन कांसेप्ट ऑफ़ रीदम" आपका विस्तृत विश्लेषणात्मक का अधिकृत ताल-ग्रंथ है, जो आने वाली पीढ़ियों का पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

कुशल वाग्गेयकार डॉ. अरूण कुमार सेन



डॉ. सेन एक कुशल वाग्गेयकार के रूप में भी प्रतिष्ठित थे। संगीत रचनाकार के रूप में आपकी सांगीतिक रचनाओं को निम्नानुसार वर्गीकरण किया जा सकता है - जैसे शास्त्रीय गायन की बंदीशें, सुगम संगीत रचनाएं, गीति नाट्य, नृत्य नाटिका आदि।

सुगम संगीत की रचनाएँ

01. गीत रामायण

डॉ. सेन के कृतित्व में "गीत रामायण" अत्यंत उत्कृष्ट एवं प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है। गीत क्रमांक 1 "अवतार व बाल्यकाल" इसमें राम जन्म का वर्णन तथा जन्म से लेकर बाल्यावस्था तक

की घटनाओं का वर्णन है। संपूर्ण गीत रामायण में कुल 25 गीत लिखे गए हैं जैसे - अहिल्या उद्धार, गौरी पूजन, सीता स्वयंवर, उर्मिला नीरव सहेली, बन गमन, केवट प्रसंग, कैकेयी का पश्चाताप, भरत की करुणा, श्रीराम की दृढ़ता, शूर्पणखा प्रसंग, सीता हरण, श्रीराम विलाप, शबरी-प्रीति, बालि वध की सार्थकता, जानकी विलाप, लंका दहन, सेतु-बंधन, रावण अंगद संवाद, राम रावण युद्ध, भरत राम मिलन, राजा राम की अग्नि परीक्षा, कर्तव्यपरायणता सीता, लव कुश कृत रामायण ज्ञान, सीता का आत्मोत्सर्ग आदि।

सीता का आत्मोत्सर्ग यह अंतिम रचना है इसलिए स्वर रचना भैरवी में की गई है क्योंकि कलाकार अपनी अंतिम प्रस्तुति भैरवी से ही करते हैं।

गीत रामायण के कुछ गीतों को स्वरलिपि में भी लिपिबद्ध किया गया है।

02. गीतगांधी

इस गीत में डॉ. सेन ने महात्मा गांधी के जन्म से लेकर उनकी बाल्यावस्था की शिक्षा दीक्षा एवं आपके परिवार के संबंधों को शब्दों में वर्णित किया है। उनके विवाह का भी वर्णन इस गीत में किया है। गीतगांधी सात गीतों से युक्त है।

03. गीतनानक

डॉ. सेन ने भारत में जन्म लिए महापुरुषों के चरित्र से प्रभावित होकर उनके जीवन चरित्र का अध्ययन किया। उनके प्रसंगों को लेकर शब्द रचना एवं स्वर रचना की।

इसी तारतम्य में आपने गुरुनानक के चरित्र और उनके द्वारा किए गए कार्यों को हिन्दी में प्रसंगानुसार पद की रचना कर उसे स्वरबद्ध किया।

04. गीत महावीर

"नवकार मंत्र" स्वरों के माध्यम से श्लोकों का गायन होता है, उसी प्रकार नवकार मंत्र को आपके द्वारा यमन कल्याण राग के स्वरों में भावपूर्ण गाया गया है ताकि मन को शांति मिल सके। इसमें कुल आठ गीत हैं।

05. गीत विवेकानंद

यह विवेकानन्द जी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र पर आधारित है।

06. छत्तीसगढ़ी गीत

पारम्परिक छत्तीसगढ़ी गीतों से हटकर छत्तीसगढ़ी गीत की कल्पना डॉ. सेन द्वारा की गई है। फिल्मी गीतों की तर्ज पर इन गीतों की स्वर रचना की गई है। परन्तु छत्तीसगढ़ी पारम्परिक गीतों

की महक को इन गीतों में रखने का प्रयास भी किया गया है। एच.एम.व्ही. द्वारा इसे रिकॉर्ड करना छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एक गौरव का विषय है।

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। सन् 1935 में स्व. पं. विष्णुकृष्ण जोशी जी ने पहली बार शास्त्रीय संगीत की शिक्षा का सूत्रपात किया था। आप उनके परम शिष्य थे। आपने अपने परिश्रम और लगन से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान दिया, जिसके फलस्वरूप पुरे देश में छत्तीसगढ़ का नाम गौरवान्वित हुआ।

अनेक प्रशासनिक पदों पर कार्य करने एवं अपनी संस्थाओं के संचालन में व्यस्तता के बावजूद शोध कार्य पूर्ण करना और उन्हें निर्विवाद रूप से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कराना मामूली बात नहीं है। अपने जीवनकाल में आपने जो भी कार्य किए, जिनजिन क्षेत्रों में कार्य किए वे बड़े ठोस कार्य के रूप में आज विद्यमान हैं।

डॉ. अरूण कुमार सेन द्वारा स्थापित तथा संचालित संगीत एवं संगीतेतर संस्थाएँ

डॉ. सेन बहुमुखी, प्रतिष्ठावान, ओजस्वी विद्वान व्यक्तित्व होने के कारण समाज को एक दिशा, ज्ञान, सेवा आदि को अपने श्रम एवं कर्म सींच कर समर्पित किया। किसी भी व्यक्ति द्वारा संस्थाओं की स्थापना करना सरल नहीं होता। सेन मूलतः एक शिक्षक और कलाकार थे



एवं
नयी
से
डॉ.

इसलिए यह संभव हुआ। आपने अनेक संस्थाओं की स्थापना की। संस्थाओं के निर्माण में आपके मित्र व सहपाठीगण ने सहयोग किया।

आपके द्वारा संस्थापित संगीत संबंधी संस्थाएँ

1. भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति
2. कमलादेवी संगीत महाविद्यालय
3. भातखण्डे संगीत संस्थान

01.भातखण्डे ललित कला शिक्षा समितिरायपुर

ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोपरि है। संगीत के क्षेत्र में उत्तम कार्य करने के उद्देश्य से भातखण्डे शिक्षा समिति की स्थापना की गयी।

यह एक विचारणीय तथ्य हो सकता है कि डॉ. सेन जी ने अपने समिति के नामकरण में 'भातखण्डे' शब्द क्यों रखा ? पं. भातखण्डे मुंबई हाईकोर्ट में अधिवक्ता थे बावजूद इसके उन्होंने शास्त्रीय

संगीत की बंदिशों को सुनकर क्रमिक पुस्तक "मालिका" लिखी। लखनऊ में संगीत संस्था की स्थापना की। डॉ. सेन ने भातखण्डे जी को अपना आदर्श माना। संगीत के महर्षि एवं युगपुरूष पं. विष्णुनारायण भातखण्डे जी से आप बहुत प्रभावित थे इसलिए अपने द्वारा निर्मित समिति का नामकरण आपने "भातखण्डे ललित कला" रखा। इसकी स्थापना का उद्देश्य शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, नाट्य व नृत्य तथा अन्य ललितकलाओं के साथ-साथ नारी शिक्षा का है।

02.कमलादेवी संगीत महाविद्यालय की स्थापना एवं विकास

2 जुलाई सन् 1950 को संगीत महाविद्यालय की स्थापना की गयी। प्रारंभ में इसका नाम कला मंदिर रखा गया। इस महाविद्यालय की स्थापना अरुण सेन जी के जीवन की संघर्षमय गाथा है। प्रारंभ में मात्र 6 विद्यार्थियों ने संगीत में प्रवेश लिया। इससे आप दुःखी जरूर हुए परंतु निराश नहीं हुए। शनैः शनैः प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। सन् 1953में वायलिन की कक्षाएं भी प्रारंभ हुई। सन् 1954 में नृत्य विभाग प्रारंभ हुआ। सन् 1956 में संगीत महाविद्यालय रंगमंदिर में स्थानांतरित हुआ। सन् 1957 में स्व. विनायकराव पटवर्धन की सुपुत्री श्रीमती कमल केलकर ने वहाँ संगीत शिक्षिका के रूप में नौकरी शुरू की, जिससे महाविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ी। सन् 1956 में इस महाविद्यालय को इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से अस्थायी संबद्धता और 1961में स्थायी संबद्धता मिली। शासन से 1955 से अनुदान मिलने लगा। वर्तमान में डिप्लोमा एवं डिग्री के पाठ्यक्रमों का अध्ययन यहां होता है।

03.भातखण्डे संगीत संस्थान

सन् 1982 में मुंबई में भातखण्डे इंटरव्यू आफ म्यूजिक एंड म्यूजिकोलाजी की स्थापना की गयी। जो डॉ. सेन के संगीतशास्त्र के प्रति विशेष लगाव को दर्शाता है।

डॉ. अरुण कुमार सेन द्वारा लिखे गए ग्रंथ एवं लेख का विवरण



डॉ. सेन का हृदय एक कलाकार का हृदय रहा है। आपका रचनात्मक योगदान प्रत्येक क्रियाकलाप में दर्शित होता है। आप केवल संगीतज्ञ, गायक, शिक्षक, प्रशासक और समाजसेवी ही नहीं अपितु लेखक भी थे। आपका यह लेखक व्यक्तित्व भी बहुआयामी था जो आपकी विविध रचनाओं से स्पष्ट होता है। "सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्" की आपकी अनुभूति

विविध काव्यरूपों में प्रस्फुटित हुई है -

(क) शोध प्रबंध

(ख) बालोपयोगी (गीत पाठशाला)

(ग) गीत

(घ) संगीत नाटिका

(ङ.) आलेख

(च) संस्मरण

(छ) अनुवाद

"नास्ति तेषां यशः कायेजरामरणजंभयम्।"

ऐसे कर्मयोगियों की यश-काया जरा-मरण से मुक्त चितरंजन अजर-अमर रहती है । सूरज, हम कहते हैं उगता है और अस्त होता है, लेकिन वास्तव में यह हमेशा स्थिर और आलोकित ही रहता है, भले ही हम अंधेरे में उसे देख नहीं पाते।

यास्मीन सिंह

कथक नृत्यांगना-रायगढ़ घराना

पीएच.डी. स्कॉलर

डी.1/20, शासकीय आवासीय परिसर

देवेन्द्र नगर

रायपुर 492011(छ.ग.)

मो.नं.097550 38387

Email: kathakraigah16@gmail.com